भगवान श्री कल्कि

श्री हनुमान जी

श्री कल्कि बाल वाटिका
मासिक पत्रिका

मां वैष्णवी

गुरूदेव लक्ष्मीनारायण जी

अंक 6, कुल पृष्ठ 16 मूल्य :मात्र 10 रुपए मास जून 2013

पृष्ठ 2-3 भगवान श्री कल्कि 12 को विंध्याचल व 13 को कांशी में विराजे

पृष्ठ 4-5 भगवान श्री कल्कि 28 अप्रैल को मुक्तेश्वर धाम नैनीताल में विराजे

पृष्ठ 6 भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना रोहिणी नई दिल्ली में...

कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना आभार: रश्मि गुप्त 9873345859

अप्रैल- मई में भगवान श्री कल्कि की 9 मूर्ति स्थापना के बाद अब अन्य राजा रानी भी कल्कि भगवान की 11 मूर्तियां शीघ्र लगाने में जुटे

मई 12	विंध्याचल, मिर्जापुर	मई 13	अन्न क्षेत्र, कांशी
मई 13	भागीरथी घाट, कांशी	मई 29	शोवा बाजार कोलकाता
मई 16	रोहिणी, सैक्टर-7	अप्रैल 29	मुक्तेश्वर, नैनीताल
अप्रैल 2	असरोही	अप्रैल 14	बहादुरगढ़, हरियाणा
अप्रैल 13	घंटाघर, सब्जी मंडी , दिल्ली	अप्रैल	कुल 9

शीघ्र फलदायी कलियुग में महाविष्णु के युगावतार चमत्कारी प्रभु श्री कल्कि

1.अग्रोहा धाम 2.काजला धाम 3.श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर 4.चुलकाना धाम (हिसार-सिरसा-हरियाणा) 5.रास विहार पटपड़गंज 6.शिव मंदिर डियर पार्क ग्रीन पार्क 7. पीपल महादेव छिपी वाड़ा दरीबा कलां (दिल्ली-नई दिल्ली) 8.शामली यू.पी. 9.दक्षिणेश्वर आद्यापीठ, कोलकाता 10.जगदेश्वर महामृत्युंजय के बराबर 11.रूद्रपुर उत्तराखंड

श्री कल्कि बाल वाटिका की कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	29 जून
पटपड़गंज	22 जून
यमुना विहार	8 जून
पंजाबी बाग	15 जून
गगन विहार	22 जून
महावीर नगर	29 जून
मॉडल बस्ती	8 जून
नोएडा	1 जून

आश्चर्यजनक किंतु सत्य भगवान श्री कल्कि महाविष्णु के पहले ऐसे अवतार हैं जिनके प्रगट होने से पहले मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है।

www.shrikalkibalvatika.com Kalki Group (Real)

भगवान श्री कल्कि 12 व 13 मई को विंध्याचल व कांशी में विराजे

—सुश्री इंदू बंसल (9818416191)

राज राजेश्वर महाराजाधिराज भगवान श्री कल्कि देवी माँ के 51 शक्तिपीठों में सर्वश्रेष्ठ शक्तिपीठ (विंध्याचल) में 12 मई 2013 को विराजमान हुए। (यह शक्तिपीठ समस्त शक्तिपीठों के लिए पावर ट्रांसफार्मर का काम करता है।) वाराणसी (काशी) में माँ गंगा की गोद में दशाश्वमेघ घाट में (जहाँ ब्रह्माजी ने आदिकाल में दस अश्वमेध यज्ञ किए थे) माँ शीतला के मंदिर में (माँ शीतला जो कलि के ताप से तड़पते हुए व्यक्ति को शीतलता प्रदान करती हैं) एवं अन्न क्षेत्र काशी, बृहस्पति मंदिर के सामने 13 मई 2013 को विराजमान हुए।

दिल्ली व अन्य भागों से 57 भक्त हवाई जहाज द्वारा, 52 भक्त शिव गंगा रेल से और 10 भक्त कोलकाता, रानीगंज एवं लखनऊ से 6 भक्त दोनों जगह की मूर्ति स्थापना में सहभागी बने। 9 मई से 13 मई तक पाँच दिवसीय कल्कि जी की तीन मूर्तियों की स्थापना का यह समारोह अद्‌भुत, ब्याह शादी जैसा आनंदमयी एवं अलौकिक था। प्रतिपल ऐसा लग रहा था कोई भी व्यक्ति विशेष सूत्रधार नहीं है बल्कि अंतर्जगत की दैवीय शक्तियों के द्वारा विशेष सहायता आई हुई है और दैवीय शक्तियां इसका संचालन कर रही हैं। नवंबर माह 2012 में जो वाराणसी में कूष्माण्डा माँ के दरबार में भी भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हुई थी। 11 मई को शाम 5 बजे से 8 बजे तक कूष्माण्डा माँ के दरबार में दिल्ली से गए कल्कि भक्तों ने भव्य भजन संध्या का आयोजन किया। बाल वाटिका के नन्हें मुन्हें बच्चों ने बहुत सुंदर भजन गाकर वहाँ पर उपस्थित जन समाज का मन मोह लिया। माँ कूष्माण्डा के साथ माँ अन्नपूर्णा की भी उस भजन संध्या में विशेष कृपा रही। 300 व्यक्तियों के विशेष भोजन की व्यवस्था माँ अन्नपूर्णा द्वारा श्री कल्कि बाल वाटिका के लिए एक गर्व की बात है। हवाई जहाज से आने वाले भक्त 13 मई को 5 बजे एवं ट्रेन से आने वाले भक्त 14 मई को प्रातः काल 7 बजे सकुशल अपने घर पहुंच गए।

विंध्यवासिनी परिसर में भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा निकालने का एक अनुपम दृश्य और वहीं विंध्य महादेव ने अपने पास भगवान श्री कल्कि को विराजमान करवाया

श्री कल्कि शोभायात्रा की कुछ झलकियाँ

—सुश्री आकांक्षा चौधरी कोलकाता (9831072107)

विन्ध्याचल, (मिर्जापुर) जिस स्थान को किसी के परिचय की आवश्यकता नहीं है, जहाँ मां विंध्यावासिनी का दरबार है। उसी मां विन्ध्यावासिनी के मन्दिर के परिसर में विंध्य महादेव के पास में 12 मई 2013 को हमारे प्रभु कल्कि नारायण विराजमान हुए।

माँ विन्ध्यावासिनी का मन्दिर वह शक्तिपीठ है जहाँ माँ सती का बाएं पाँव का अंगूठा भी गिरा था। यह वह महाशक्तिपीठ है जहाँ सूर्य की पहली किरण पड़ती है। यहाँ गंगा और विंध्य पर्वत का संगम भी होता है। इसी पावन स्थली पर हमारे प्रभु श्री कल्कि 12 मई 2013 को प्रतिष्ठित हुए

9 मई 2013 को जब हम विन्ध्वेश्वरजी महाराज के मन्दिर पहुँचे तो हमने पाया कि सारी तैयारियाँ मामाजी (श्री ओ. पी. गुप्ता) और कुमार हर्षित बंसल द्वारा पहले से ही व्यवस्थित करा दी गई थी। 11 मई को आचार्य जी एवं वेद पाठी पंडित पूजा में बैठे थे और हम सब भी कल्कि जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की पूजा में बैठ गए। सारी तैयारियाँ बहुत अच्छे से की गई थीं। छोटी-छोटी बारिकियाँ जैसे कूलर और पंखे तक का ध्यान भी रखा गया था। उस दिन हमने सारा दिन पूजा करी। सभी देवी-देवताओं का आह्वान कर इस विशिष्ट कार्य के लिये उन्हें आमंत्रित किया गया। अगले दिन प्रातः आठ बजे हम मन्दिर में पूजा में बैठ गए। उस दिन हमने शिवजी की विशेष पूजा की और अगले दिन बनारस से आने वाले 50 भक्तों के लिए विशेष व्यवस्था तैयारी की।

12 मई 2013 को प्रातः 5 बजे माँ विन्ध्वासिनी के मन्दिर में हम सभी भक्तगण पहुँचे और मां विन्ध्यवासिनी के दर्शन करने के पश्चात् हमने वहाँ मन्दिर के हवन कुण्ड में कल्कि सहस्त्रनाम का हवन किया। कल्कि जी के सवा लाख भक्तों की तरफ़ से सवा लाख ज्योत प्रज्जवलित की और कल्कि जी से प्रार्थना करी कि हे श्री कल्कि भगवान आप अपनी सवा लाख भक्तों की सेना तैयार कर शीघ्रातिशीघ्र प्रकट होकर धरा का भार उतारें। उसके पश्चात् कल्कि जी की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारी में सभी कल्कि भक्त जो अब बनारस से भी अपनी गाड़ियों में आ गए थे जुट गए। पूजा प्रार्थना के बाद कल्कि जी का श्रृंगार कर उनकी शोभायात्रा निकाली गई। भक्त समुदाय ने जोर शोर से नाचते गाते हुए कल्कि जी की शोभायात्रा निकाली इसमें कल्कि जी की पैमफ्लेट किताबें साहित्य की पुस्तके श्रद्धालुओं को दी गई। नगर फेरी के बाद कल्कि जी अपने सिंहासन पर विराजमान हुए। उनकी आरती के बाद, उन्हें भोग लगाया गया। सभी भाग्यवान कल्कि भक्तजनो ने बड़ी श्रदधा से भगवान श्री कल्कि के महाप्रसाद को ग्रहण किया।

गंगा मैया की मनोरम मूर्ति
दशाश्वमेघ घाट, कांशी

भगवान श्री कल्कि, दशाश्वमेघ घाट
माँ शीतला मंदिर

समस्त कल्कि भक्त दशाश्वमेघ घाट
पर माँ गंगा की आरती करते हुए

अब भगवान श्री कल्कि 28 अप्रैल को मुक्तेश्वर नैनीताल में विराजे

रोमांचित अनुभवों से भरी मुक्तेश्वर में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना

–सुश्री रश्मि गुप्ता

मुक्तेश्वर जाने से पहले सभी कल्कि भक्तों के मन में यह आशंका थी कि पता नहीं कैसी जगह होगी? यहाँ तीन दिन कैसे कटेंगे? लेकिन यहाँ आकर सभी का अनुभव मूर्ति स्थापना के साथ साथ पिकनिक का भी रहा। यह एक अदभुत, शांत एवं रोमांचक जगह है जहाँ शिव जी का साक्षात वास है।

मुक्तेश्वर नैनीताल जिले की सबसे ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह शिव मंदिर है। मंदिर सड़क से 200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है यहाँ पर पहुंचने के लिए काफी सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। वैसे तो मैं यहाँ पहले भी 4-5 बार आ चुकी हूँ लेकिन पिछले साल सीढ़ियां चढ़ते हुए पैरों में ज्यादा ही कष्ट हुआ। लेकिन इस बार तो पहली सीढ़ी पर कदम रखते ही अदभुत शक्ति का संचार हुआ और हम सभी चढ़ते चले गए। भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना शिव मंदिर के बराबर राम दरबार में हुई।

इस मंदिर का इतिहास भी अदभुत है। अंदर एक कमरे में एक गुफा का रास्ता है। इस मंदिर के महंत बंगाली बाबा ने हमें गुफा का रास्ता दिखाते हुए बताया था कि यह रास्ता कनखल (हरिद्वार) तक जाता है। इस गुफा में हजारों सालों से ऋषि मुनि तपस्या कर रहे हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस गुफा का दरवाजा बंद कर दिया गया था क्योंकि कई गलत प्रकृति के लोगों ने यहाँ घुस कर उनकी तपस्या भंग करने की चेष्टा की।

29 मार्च 2013 को जब मैं अपने पति और बेटे ध्रुव के साथ मन्दिर गई तो भाव विभोर हुए बाबा ने बताया कि कल्कि जी की मूर्ति की स्थापना तो मूर्ति रखते ही हो चुकी है, अब तो हम केवल समाजिक प्रथा निभाने जा रहे हैं। 47 लोगों का समूह रेलगाड़ी और अपनी गाड़ियों से 27 अप्रैल को मुक्तेश्वर के कृष्णा लॉज में ठहरे जो मल्टीपर्पस सहूलियत संजोय रिसोर्ट है। वहीं 27 अप्रैल की शाम को सभी कल्कि भक्तों ने मिलकर बॉन फायर किया जिसमें सत्संग व अनुभव बाँटे गए। एक बड़े शिवलिंग के चित्र को जय श्री कल्कि लिखकर कर भरा और अगले दिन मुक्तेश्वर मन्दिर में शिवलिंग पर अर्पित कर दिया। रात के खाने के बाद अनुभव गोष्ठी हुई जिसे मुख्य रूप से डॉ वी. पी. गुप्ता और रश्मि गुप्ता ने संचालित किया।

स्वप्नानुभव—रश्मि गुप्ता

मैं अपने परिवार के साथ किसी पहाड़ी स्थान पर जा रही हूँ। अचानक एक तरफ पहाड़ और एक तरफ़ पानी दिखने लगता है। मैं सोचती हूँ यह तो नौ कुचिया ताल है। अचानक एक्सीडेंट हुआ और उसमें मेरे पति की मृत्यु हो गई इसपर ओमो चाचा जी (मामाजी) हँसते हुए दिखे। फिर मेरी बहन रेनू की आवाज आई कि आप तो कह रही थीं कि चाचा जी से बात करनी है पर वो तो दो दिन से अस्पताल में हैं।

जुलाई 2012 में अनुभव देखा था जिसमें मुक्तेश्वर जैसी कोई जगह थी जिसमें एक सुरंग में राजपुर रोड परिवार के सभी सदस्य गए। वहाँ आसुरी शक्तियों ने प्रहार करके सभी को रोक लिया लेकिन श्री योगेश गुप्ता व उनका परिवार जय श्री कल्कि की माला जपते हुए आसुरी शक्तियों के प्रहारों से बच निकले।

अर्थ— चाचाजी ने बताया कि अनुभव पहले दृष्टा के लिये संकेत करता है। वैसे तो यह उन्नति दिखाता है। सब कुछ अच्छा दिखा रहा है बस मेरे पति के स्वास्थ्य के लिये अच्छा नहीं है। चाचा जी ने कहा अच्छा हो अगर परिवार के साथ नौकुचिया ताल हो आओ। इसपर मैंने चाचाजी को बताया कि अगस्त 2012 में नैनीताल गई थी और वहाँ से मुक्तेश्वर धाम भी गई थी। इस बार मैं शंकर भगवान से कह रही थी कि भगवान पता नहीं अब कैसे आऊँगी मेरे पैरों में बहुत दर्द रहता है। तब चाचाजी ने कहा देखलो हिम्मत करके हो आओ। अगले दिन 9 दिसम्बर को मुझे मासिक पत्रिका मिली तो मैं हैरान रह गई यह पढ़कर कि नैनीताल में मुक्तेश्वर धाम में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना होने जा रही है।

अनुभव (श्रीमति रेनू बंसल)—

लेकर जाग रहे हैं और मुस्कुरा रहे हैं।

इन सभी अनुभवों को ध्यान में रखते हुए हमने संकल्प लिये—

धन्वंतरी जी 20 रुपये, वासुकी जी 20 रुपये, काली मां 20 रुपये, दुर्गा जी की योगनियाँ 20 रुपये, हनुमान जी की योगी-योगनियाँ 129 रुपये, यमुना जी के जोडे 500 रुपये, योगमाया मां 20 रुपये, सूर्य देव 20 रुपये, इंद्र देव 20 रुपये, पवन देव 20 रुपये, भैरो जी की दवाई 100 रुपये, बगलामुखी मां 20 रुपये, रुद्राभिषेक 11। इन सभी संकल्पों में बड़े और बच्चों ने 3 दिन तक हाथ लगाया। 27 अप्रैल की रात को काफी तेज तूफान और बारिश आई। सभी डर गए और सुबह के दर्शनों की चिंता करने लगे। मौसम की भीषणता को देखते हुए मामाजी ने हमें 5-6 जनवरी 2013 को **सूर्य भगवान का अदभुत प्रसंग सुनाया** और हम सब से निम्न उपचार मौसम सही रखने के लिए करवाए।

1) इंद्र देव— 20 रु हाथ लगाकर प्रार्थना की कि हे इंद्र देव अपने बादलों को सूर्य भगवान को ढकने से रोकें।

2) पवन देव— पवन देव तीव्र गति से न बहें मंद मंद बहें।

3) सूर्य देव— हे सूर्य भगवान हम कल्कि जी की मूर्ति स्थापना करने आए हैं आप 5-6 जनवरी 2013 के बालक बालिकाओं की प्रार्थनानुसार तीन दिन तक ठंड के मौसम से हमको बचाएं। सभी कल्कि भक्त अचंभित थे कि 28 अप्रैल की सुबह भगवान शंकर और कल्कि जी ने विशेष कृपा की। मौसम पूरी तरह खुला हुआ था। सूर्यदेव अपनी पूरी आभा के साथ प्रकट हुए। प्रकृति ने तो जैसे हम कल्कि भक्तों के लिए अपनी पूरी झोली खोल दी थी। हमारे कमरों के ठीक सामने नंदा देवी, पंचशूली और त्रिशूल चोटियों के प्रत्यक्ष दर्शन हो रहे थे। यह कैलाश मानसरोवर की वो चोटियाँ हैं जो नवम्बर से फरवरी तक ही साफ़ दिखाई देती हैं लेकिन भगवान (सूर्य देव, पवन देव, इंद्र देव) ने तो कैसे अपने भक्तों के लिये सारी परिस्थितियाँ ही बदल दीं।

सभी लोग मन्दिर पहुँचे और वहाँ कल्कि भगवान के दर्शन किये। हमने बंगाली बाबा से गुफा के बारे में पूछा तो उन्होंने राम दरबार की मूर्तियों की तरफ़ इशारा करके कहा कि हमने इनसे इजाजत ले ली है, अब आप गुफा के दर्शन कर सकते हैं। हम सभी ने गुफा में स्थित ज्योर्तिलिंग के भी दर्शन किये।

इसके बाद नीचे उतर कर कुछ लोग चौली की जौली घूमने गए। शाम को रेजोर्ट में फिर से बॉन फायर हुआ और भजनों की अंताक्षरी जमकर खेली।

अगले दिन मूर्ति स्थापना के लिये सभी लोग मन्दिर में गए और भगवान शंकर जी और कल्कि जी की पूजा की। हवन करते समय एक बंदर भी वहाँ उपस्थित रहा, उसने हवन में अर्पित सामग्री को खाया भी। बाबा ने बताया कि यहाँ की सभी मूर्तियाँ जाग्रत अवस्था में हैं और शिव पार्वती यहाँ विभिन्न रूपों में विचरण करते हैं। (*मामाजी ने भी ऐसा पाया है)

भगवान श्री कल्कि की जन्मस्थली संभल ग्राम से 25 कि.मी. दूर चंदौसी की श्री कल्कि बाल वाटिका के अध्यक्ष श्री विनय राज एडवोकेट ने सहपरिवार (पत्नी, शैलजा, पुत्री शक्ति, पुत्र शिवा) के साथ चंदौसी के बाद अब दूसरी बार 29 अप्रैल 2013 को मुक्तेश्वर धाम प्राचीन शिव मंदिर में भगवान श्रीराम के बराबर आज के युगावतार भगवान श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा करवाई। इस कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा तैयार करने के लिए श्री मनोज पांडे और श्री अनुज रस्तोगी ने श्री विनय राज जी के साथ चार बार मुक्तेश्वर जाकर कल्कि भक्तों के लिए खाने की व्यवस्था संजोई। सत्संग के दौरान श्री विनय राज जी ने बताया कि मुक्तेश्वर मंदिर के बराबर सवा दो नाली (लगभग 550 गज) जगह कल्कि आश्रम के लिए ली है। जिसमें वह कल्कि भक्तों के लिए रिजोर्ट अथवा होटल में रहने की बजाय वहीं पर ठहराकर कल्कि जी के कार्यों को आगे बढ़ाएंगे।

श्री मनोज पांडे के साथ 39 कल्कि भक्तों का समूह 28 अप्रैल को नैनीताल होटल अर्श में पहुंचा। सभी ने मिलकर नैनीताल में भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा निकाली और जमकर सत्संग, संकीर्तन किया। यह सभी भक्त घूमने फिरने की चाहत वाले थे और इनके पास अपनी बस की व्यवस्था थी सो यह गोलू देव मंदिर, कैंची धाम इत्यादि दिव्य स्थलों पर गए जबकि सुश्री रश्मि गुप्ता के ग्रुप के भक्त आरामपरस्त रहे।

भगवान श्री कल्कि वात्सल्य मंदिर, रोहिणी में विराजे

— सुश्री निशी गर्ग (9990485395)

खाटू श्याम भक्त श्री मनोज कंसल जी ने अपने साथियों सहित भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना में बढ़ चढ़ कर सहयोग दिया। (ऊपर दाएं)

श्री कल्कि बाल वाटिका, व वात्सल्य सत्संग मंडल की सखियाँ शोभा यात्रा में डांडिया नृत्य करते हुए

श्री जय भगवान अग्रवाल (विधायक रोहिणी क्षेत्र) धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा गोयल, श्री आदर्श सिंघल व श्रीमती निशी गर्ग भगवान श्री कल्कि की शोभा यात्रा का आनंद लेते हुए।

16 मई 2013 को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना रोहिणी के सैक्टर-7 में वात्सल्य मंदिर में धूमधाम से संपन्न हुई। मात्र एक महीने में किस प्रकार भगवान श्री कल्कि ने यह कार्य पूरा करवाया है प्रस्तुत है उसकी कुछ झलकियाँ :—

1 अप्रैल 2013 को मूर्ति स्थापना का जिक्र करने भर से ही स्वप्नानुभव

1 अप्रैल को मेरी बहन (मेघना गोयल) की श्री मनोज पांडे से बात हुई कि रोहिणी में वात्सल्य मंदिर में पूजा की बुआ जी की बेटी के ससुराल वालो की जान पहचान से कल्कि जी की मूर्ति लग सकती है। अगले ही दिन सुश्री पूजा गुप्ता का फोन आया कि उसे स्वप्नानुभव हुआ है जैसे बहुत सारी दैवीय शक्तियाँ बैठी हैं और उसके फूफाजी (जिनकी बेटी के ससुराल वालो का वात्सल्य मंदिर है) उन्हें प्लेटों में हलुवा दे रहे हैं और बता रहे हैं कि यह उनकी बेटी की ससुराल से आया है। यह अनुभव सुनकर मेघना ने पूजा को श्री मनोज पांडे से पहले दिन हुई सारी बात बताई और यह समझ लिया कि भगवान श्री कल्कि की इच्छा है कि वहाँ मूर्ति लगे अब तो हम सब को मिलकर बस काम करना है।

10 अप्रैल 2013 को हम मूर्ति के बारे में बात करने पहली बार रोहिणी वात्सल्य मंदिर गए वहाँ श्रीमती कृष्णा गोयल जी ने जाते ही हमें भगवान की मूर्ति का स्थान दिखाया। उसी दिन मूर्ति स्थापना की तारीख भी निकाल दी गई क्योंकि मामाजी से बात करके हमें यह आश्वासन मिल गया था कि कल्कि जी की मूर्ति जयपुर से मकराने पत्थर की बनी तैयार ला दूँगा बस तारीख बता देना।

जब 5000 रु में से भी 500 रु बच गए

उस दिन अजीब सी बैचेनी थी कि कैसे यह सारा काम होगा। मनोज भैया ने बातों बातों में अपना एक स्वप्नानुभव हमें सुनाया कि वह भी भगवान कल्कि की मूर्ति स्थापना के कार्य से शुरू में जब घबराए तो कल्कि भगवान ने उन्हें स्वप्नानुभव दिया कि उनके हाथ में 5000 रु हैं और वह चिंता में है कि भगवान का इतना बड़ा महोत्सव वह इन रूपयों से कैसे पूरा करेंगे। इतने में मामाजी मनोज भैया के हाथ से 5000 रु लेकर कहते हैं कि मैं करूंगा। महोत्सव का आयोजन होने के बाद जब आरती का समय आया तो मामाजी मनोज भैया को आगे बुलाते हैं और 500 रु हाथ में देकर कहते हैं कि लो यह महोत्सव भी हो गया और यह रुपए बचे हैं। भैया ने हमें बताया कि इस अनुभव के बाद से वह भगवान श्री कल्कि का कार्य पूरा करने के बारे में सोचते हैं, कैसे होगा यह सोच कर परेशान नहीं होते। यह स्वप्नानुभव सुनने के बाद हममें एक नई शक्ति का संचार हुआ और तैयारियां शुरू हो गईं।

15 वर्ष पहले दिए स्वप्नानुभव पर मोहर लगाई

मुझे आज से 15 वर्ष पूर्व (जब मैंने भगवान श्रीकल्कि का नाम लेना शुरू ही किया था) तब कल्कि भगवान ने जिस स्वरूप के दर्शन आकाश में जिस जगह दिए थे, ठीक उसी जगह मकराने के पत्थर की जयपुर से बनी भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगी। श्री जय भगवान अग्रवाल जी, श्रीमती कृष्णा गोयल जी, श्री नान्हू राम अग्रवाल (गुप्ता जी), वात्सल्य मंदिर के ट्रस्टी, और ब्राह्मणों ने हमें भरपूर सहयोग दिया। खाटू श्याम जी के भक्त श्री मनोज कंसल जी ने शोभा यात्रा, भंडारे व जूता चप्पल सेवा सहित स्थापना से पहले दिन रोहिणी में सैक्टर 7 और 8 में मूर्ति स्थापना की एनाउसमेंट करवाई, उनके इस अमूल्य सहयोग के लिए श्री कल्कि बाल वाटिका उनकी आभारी है।

मनोज भैया का स्वप्नानुभव यहाँ भी सत्य हुआ कि 15 मई 2013 को मूर्ति स्थापना के फंड में 20-22 हजार की कमी थी। लेकिन आश्चर्यजनक किंतु सत्य 16 मई 2013 को स्थापना के बाद जब हमने फंड चैक किया तो पाया कि 5500 रु हमारे पास बचे हुए हैं।

सच ही है दोस्तों हम तो बेकार ही चिंता करते हैं करने वाले भगवान श्री कल्कि करवाने वाले भगवान श्री कल्कि हम तो निमित्त मात्र हैं। नारायण श्री कल्कि तो ऐसे हैं कि लाद दें, लदा दें और लादने वाला साथ दें।

कल्कि जी की चाहत आपके जीवपर्यन्त राजा-रानी बने रहने की वरना कल्कि जी के सैनिक तो बने रहना

द्रष्टा-कुमार रोहित गुप्ता, संयोजक- मामाजी 9899499848

स्वप्नानुभव दिनांक 4-05-2013—

क्या रोज मंदिर आते हो ?

का समय है, मैं दर्शन पूजा कर मन्दिर से बाहर की ओर आया तो मुझे दूर से एक सौम्य व्यक्ति* (नारायण) आते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो मेरा कोई अपना जानकार मेरी ओर चला आ रहा है । मैंने मुस्कुराकर उनकी ओर देखा, परन्तु जैसे ही वह (नारायण) मेरे नजदीक आए तो लगा कि यह वो नहीं शायद जिन्हें समझकर मैंने मुस्कराकर देखा था, किन्तु तभी वो मेरे और नजदीक आए। मैं कुछ समझ पाता इससे पहले उन्होंने यकायक मुझसे सवाल किया- और कैसे हो, पूजा हो गई ? मैंने कहा, जी। उन्होंने पूछा तुम रोज मन्दिर आते हो ?

कल्कि समाज के बने रहना

मैंने कहा, हम तो कल्कि भगवान जी को मानते हैं उन्हीं की पूजा करते हैं। तभी तुरन्त वे बोले अच्छा तो तुम कल्कि समाज से हो। मैंने कहा, जी समाज का तो पता नहीं लेकिन हाँ हम तो कल्कि जी को मानते हैं उन्हीं की पूजा-दर्शन करते हैं।

जानते हो राज दरबार किसे कहते हैं ?

1. वह सज्जन पुरूष (नारायण) बोले क्या कभी कोई राजदरबार देखा है ?

1. मैंने कहा, जी सच में तो नहीं हाँ फिल्मों में जरूर देखा है।

2. वे (नारायण) बोले कि जो देखा है उसकी कल्पना करो। देखो सामने ऊँचा सा राजसिंहासन सम्राट का लगा है। फिर राजा-महाराजाओं का और उसके सिंहासन के दाईं एवं बाईं ओर रानी-पटरानियों के सिंहासन हैं। अब दूसरी तरफ देखो तो राजगुरु ब्राह्मण विद्यमान हैं। नीचे की तरफ़ देखो तो सीधे हाथ की तरफ महामंत्री, मंत्री, सेनापति, और सामने की ओर सैनिक और द्वारपाल के साथ प्रजा खड़ी है। जिस प्रकार राज दरबार के ये सभी सदस्य अपना-अपना कार्य ऊपर कर रहे हैं उसी प्रकार यहाँ पर (धरती की तरफ़ इशारा करके) वही शक्तियाँ नीचे अपना कार्य कर रही हैं।

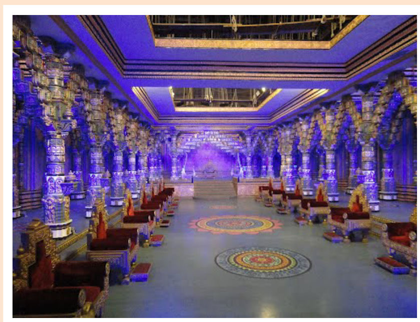

इस पर मैंने कहा कि जी मैं जरा समझा नहीं ।

इतने पर वे (नारायण) बोले अच्छा एक बात बताओ एक दिन में धरती पर कितने बच्चे पैदा होते हैं ?

मैंने कहा कि दिन का तो पता नहीं हाँ लेकिन सुना जरूर है कि एक मिनट में एक बच्चा पैदा होता है। इस पर तुरन्त ही वे (नारायण) पूरे विश्वास से बोले कि तो क्या वो सारे कल्कि समाज से जुड़ जाते हैं या कल्कि समाज में ही पैदा होते हैं! मैं स्तब्ध सा खड़ा उनको (नारायण) को देखता व सुनता रहा कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ!

इतने पर वे (नारायण) फिर बोले कि शक्तियो को नीचे भेजा (ट्रांस्फर) जा रहा है, और वे सब जैसा अपना कार्य ऊपर कर रहे हैं वैसा ही राजदरबार नीचे लग चुका है और वह अपना कार्य नीचे भी कर रहे हैं।.इस पर मैंने कहा कैसे ?

तो वे (नारायण) बोले कि जिस प्रकार किसी भी वी.आई.पी. नेता को किसी जगह आना होता है तो वहाँ पर पुलिस वालों (सरकारी कर्मचारियों) की एक प्रकार से छावनी सी बन जाती है। वहाँ पर कोई भी चोर-उचक्का, उठाइगिरा नजर नहीं आता। उसी प्रकार जब किसी धार्मिक स्थल की शक्ति को बढ़ाना होता है तो वहाँ पर कल्कि वालों की छावनी बन जाती है। कल्कि वाले वहाँ के तेज को बढ़ाने के लिए वहाँ धार्मिक आयोजन, यज्ञ, हवन, सत्संग, संकीर्तन, मूर्ति स्थापना करके वहाँ की शक्ति बढ़ा देते हैं। नारायण श्री कल्कि वहाँ आते हैं लेकिन उनको कोई देख नहीं पाता। नारायण श्री कल्कि वहाँ आकर शक्तियाँ स्थापित कर देते हैं और उस स्थान पर से बुराईयां दूर हो जानी शुरु हो जाती हैं। फिर नारायण बोले आओ दो-दो

पूड़ी खाते हैं, इस पर मैंने कहा कि अभी घर की पूजा करनी है फिर.... तो वे (नारायण) बोले अरे.. कुछ नहीं होता आओ चलो खाते हैं, और हम पूड़ी खाने लगे।

स्वप्नानुभव प्रात:काल दिनांक 16-05-2013

परेड मैदान रामलीला की सवारी में भगवान श्री कल्कि जी का रथ की बनावट कार्य में हम सभी लीन थे ताऊ जी (मामाजी) नीचे खड़े थे और हम सबको निर्देशन दे रहे थे कि किस प्रकार सजावट करनी है। हमारे दल के बाकी सदस्य अपने अपने कार्यों को पूर्ण करते जा रहे थे। रथ के ऊपर जिसकी ऊचाईं धरती से 8 फुट होगी, पर मैं निक्कर बनियान पहने स्टूल पर खड़ा हूँ और रथ की बैक स्टेज तैयार कर रहा हूँ कि अचानक हथौड़ी नीचे गिर जाती है। मैंने देखा कि कोई आसपास हो तो हथौड़ी उठाकर पकड़ा दे, वरना मुझे नीचे जाकर लानी पड़ेगी कि अचानक से वह (नारायण) जो कि झुक कर उठे और मेरी तरफ देखकर बोले ये लो तुम्हारी हथौड़ी। वही नारायण जो 4 मई 2013 को अनुभव में दिखे थे मेरी तरफ को रूबरू हुए तो मेरे मुँह से एकदम निकला "ओह आप यहाँ पर" (एक मुस्कराहट भरे स्वर में) इस पर वह बोले कि क्या बात है अकेले ही लगे हुए हो? तो मैंने कहा कि ऐसा नहीं है सभी अपने कार्यों में व्यस्त हैं। और आप सुनाइये कैसे हो जी?

अपने को अकेला क्यों मानते हो (मैं हूँ ना)

कल्कि भक्तों का शरीर छूटने पर भी मेरी शक्तियाँ धरती पर रहती हैं

इस पर वह (नारायण) बोले कि ठीक हूँ लेकिन तुम अपने आप को अकेला क्यों मानते हो? शायद तुम्हें पता नहीं कि जिन शक्तियों को ऊपर से यहाँ पर भेजा जाता है वह शक्तियाँ यही रहती हैं। बस जिन शरीरों में वह होती हैं उन मनुष्यों के शरीर छूटने पर वह शक्तियाँ दूसरे शरीरों में भेज (ट्रांस्फर) दी जाती हैं। मैंने पूछा ऐसा कैसे? वह (नारायण) बोले कि अगर यहाँ पर पाँच व्यक्ति कल्कि नाम लेने वाले हो और वह पाँचों का शरीर एक ही दिन पूरा हो जाए तो कल्कि का नाम प्रचार-प्रसार आगे कौन जान पाएगा? कौन किसको बता पाएगा? इसलिए (कहकर यहाँ पर वो रुके) फिर वह (नारायण) बोले अच्छा तुम एक पल के लिए सोचकर बताओ कि क्या कभी तुमने किसी व्यक्ति को कल्कि भक्ति के लिए प्रेरित किया है और क्या वो मान गया?

तुम मेरे प्राकट्य के प्रचार का कार्य करो, बाकी काम मेरी शक्तियाँ देखेंगी

मैं थोड़ा सा सोच में चला गया तभी वह (नारायण) यकायक बोले कि तुमने अब तक कई लोगो को कल्कि के विषय पर सत्संग किया होगा उन्हें इस संदर्भ में चेताया होगा क्या वह सभी तुम्हारी मान गए?

मैं कुछ सोच पाता और बोल पाता उससे पहले ही उन्होंने कहा कि जो कार्य प्रचार-प्रसार सत्संग का है उसे आप करते जा रहे हो वह आपका कार्य है लेकिन आप जिस भी व्यक्ति को कल्कि सत्संग से अवगत करा रहे हो उसको शक्ति (तेज) देने का कार्य भी कोई वहाँ (ऊपर की ओर ईशारा करते हुए) देख रहा है। **पूरे मन से भक्ति से आपके दिए सत्संग को जो ध्याता सो उसे शक्ति दे दी जाती है।** जरा सोचकर देखो कि आज और अब तक आपने कितने लोगो को कल्कि नाम की प्रेरणा दी, प्रचार किया, सत्संग किया क्या वह सारे लोग आपको कल्कि के कार्यों में नज़र आते हैं? कही भी किसी भी जगह जहाँ कल्कि प्रचार, गुनगान, भजन, कीर्तन सत्संग हो रहा हो-नहीं ना (अर्थात् सब नहीं) हाँ कुछ जरूर नज़र आते होंगे।

इतना कहकर वह कुछ रुके, तो मैंने सोच-विचार किया कि कोलकाता जाते समय एक फैमिली मिली थी जिनको मैने कल्कि जी के विषय में जानकारी दी थी और जो उस परिवार के मुखिया श्रीमान अमरनाथ शाह जिनसे कल्कि जी के विषय में बात हुई तो उन्होंने उस समय बस इतना ही कहा था कि नाम तो सुना है कल्कि जी का लेकिन हमारे यहाँ ज्यादातर काली मां की ही पूजा दर्शन करते हैं। धीरे-धीरे कुछ समय बीता और श्रीमान अमरनाथ शाह जी ने श्री कल्कि जी के प्रति अपनी रुचि बढ़ाई और आज वह कोलकाता में श्री कल्कि जी के प्रचार-प्रसार के कार्यों में पूरे विश्वास और मन से जुटे हुए हैं।

अब कल्कि के काम करने वालों की कमी न होगी

अभी मैं इतना सोच ही पाया था कि अचानक से वह (नारायण) बोले कि अब कल्कि नाम का प्रचार-प्रसार करने वालो की कोई कमी ना होगी क्योंकि सिर्फ शरीर ही पूरा होगा शक्तियाँ दूसरे शरीरों में भेज (ट्रांस्फर) दी जाएंगी।

कल्कि जी उम्र, वैभवता, धन सब देते हैं

उन्होंने (नारायण) एक बात और कही थी कि इन शक्तियों का समय होता है। चाहे शरीर पूरा हो या ना हो। शक्तियाँ केवल निर्धारित समय के लिए ही शरीर में भेजी जाती है। बाकि तो मनुष्य के कर्मों और कार्यों के साथ समय (नियति) पर निर्भर करता है। यदि वह अच्छा करता रहता है तो शक्तियों का समय बढ़ता जाता है और ये सिर्फ तभी संभव होता है जब मनुष्य अच्छे कर्म करता है। उसी अच्छे कर्मों के फल स्वरूप उन शक्तियों को बढ़ावा मिलता है और वह उस नश्वर शरीर में कुछ और या यूं कहे कि अपने निर्धारित समय से भी अधिक जीता है और शक्तियां भी अधिक समय तक टिकी (बनी)रहती हैं।

शक्तियों का खेल समझो गोआ भारत का न होता*

यदि यकीन न हो तो अपने आस-पास देखो कि ऐसा कौन सा परिवार या व्यक्ति है जो पहले तो कल्कि प्रचार के कार्यों को पूरी तनमयता से करता था लेकिन अब हाल ही के कुछ समय साल महीने या दिनों में उसकी रुचि या यूं कहें कि उसका रुझान विश्वास कम हो गया है और कल्कि प्रचार और कार्यों को कम समय दे पा रहा है।

क्योंकि ऐसा इसलिए है कि उसके पास जो शक्ति है उसका समय पूरा हो गया है यदि वह परिवार या व्यक्ति समय रहते ना चेता तो वह सिर्फ कल्कि नाम से जुड़ा होगा किसी भी पुकार के कार्यों से नहीं। ये ही उसकी अब तक की भक्ति का मीठा फल होगा कि वह सिर्फ कल्कि वाला कहलाएगा।

बन पड़े तो पानी बोतल से नहीं गिलास या ओक से पीयें

इतना कह कर उन्होंने मुझसे पानी मांगा तो मैंने उनको पानी का जग प्रस्तुत किया। उन्होंने (नारायण) अपने सीधे हाथ की हथेली को अपने मुख से लगा (ओक की तरह) सिर्फ इशारा किया और मैंने पानी उनकी हथेली पर ओजना शुरु किया। पानी उनकी हथेली से होता हुआ मुख में प्रवेश कर रहा था।

बन पड़े तो जेब में रूमाल अवश्य रखें

पानी पीने के बाद अपने कुर्ते की जेब से वह रुमाल निकाल कर मंद मंद मुस्कराते हैं और कहते हैं कि अरे..... तुम तो कुछ ज्यादा ही भाग्यवान हो जिसको सवारी द्वारा प्रचार कार्य का प्रभु सेवा का अलौकिक कार्य मिला हुआ है।

जब कल्कि के स्वरूपों ने विशेष श्रेणी दिलाई

इस पर मैंने पूछा कि अलौकिक... इसमें ऐसा क्या अलौकिक है। मैं कुछ समझा नहीं तो उन्होंने कहा कि सभी जगह (कई जगह) कल्कि जी की सवारी निकाली जाती है। किन्तु भगवान के रूप का- स्वरूप का-उनके श्रृंगार का सब कुछ तुम पर निर्भर करता है कि किस व्यक्ति को प्रभु के रूप का स्वरूप देना है/ किसे नहीं। अब तक जितनी भी सवारियाँ निकली हैं उनमें प्रभु के रूप को सजीव तौर पर स्वरूप तुम्हारे यहाँ से ही तो मिला है। इससे और ज्यादा अलौकिक कार्य क्या करोगे दोस्त? इतना कह वह पीछे की ओर से जाने लगे कि रथ तैयार करने में लगे एक सदस्य ने मुझे आवाज लगाई और कहा कि फूलवाला कब तक आएगा भईया? मैंने कहा आ जाएगा अभी समय है **तुरन्त** उस दिशा की तरफ पलट कर देखा जहाँ वह (नारायण) थे तब तक वह अंतर्ध्यान हो चुके थे।

आज के इस अनुभव के बाद मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा और ध्यान में आ रहा था वो तेजमयी चेहरा जिसको उस समय तो मैं देख पा रहा था परन्तु आँख खुलते ही दोबारा तेजमयी चेहरे को देखने की चेष्ठा की लेकिन देख पाना संभव ना हो सका।

इससे पहले वाले 4-05-2013 के अनुभव में वह (नारायण) पैंट शर्ट में मिले जबकि इस बार वह कुर्ते पायजामे में आए थे।एक बात और मैंने नोट की थी कि आज तक मैंने कई प्रकार की खुशबू सूंघी हैं लेकिन इस 16-05-2013 वाले अनुभव के समय मैंने एक विशेष प्रकार की भीनी-मनभावन-शीतल सुगन्ध महसूस की जब वह (नारायण) बात करते समय मेरे नजदीक आए थे।

*स्वप्नानुभव एक संपदा ग्रंथ के अनुसार मानूँ मैं न मानूं पृष्ठ 5 के अनुरूप हम इन्हें कल्कि भगवान मानकर नारायण नाम से संबोधित कर रहे हैं।

नोट— अर्थ-उपचार-प्रार्थना अगले अंकों में पढ़ें।

*शक्तियों का खेल समझो—गोआ स्वतंत्र भारत का ना होकर कश्मीर की तरह नासूर बना होता— डॉ वी. पी. गुप्ता (अगले अंको में पढ़ें)

समय रहते काम कर जाओ शक्तियाँ हमेशा बनी नहीं रहतीं

—आकांक्षा चौधरी (कोलकाता)

मुझे 27 मई 2013 को वाणी अनुभव हुआ—

वाणी अनुभव— तुम्हारी डाक्यूमेंटरी का क्या हुआ?

आकांक्षा— मैंने वह पूरी करके दिल्ली भेज दी है, पर उसका सर्कुलेशन नहीं हो रहा है। उसे मामाजी ने रोक दिया है ताकि उसमें कुछ बदला जाए।

वाणी अनुभव—तुम्हें किसने कहा कि उसमें बदलाव होंगे? जो शक्तियाँ* उसे बनाने के लिए आई थीं वह चली गईं है। अब अगर तुम नाक भी रगड़ोगी तो भी इस डाक्यूमेंटरी में कुछ बदलाव नहीं हो सकता। इस काम को आगे बढ़ाओ वर्ना तुम्हारे पॉइंट रोज कट रहे हैं।

आकांक्षा—मैंने तो अपनी तरफ से सब कुछ कर दिया। डाक्यूमेंटरी पूरी कर दी है। पत्रिका में भी हर महीने डाक्यूमेंटरी के लिए छप रहा है और कितने लोगों को तो हमने इसकी कॉपी अपने हाथों से दी है। फिर भी मेरे नंबर क्यों कट रहे हैं? अगर दिल्ली में इसका काम आगे नहीं बढ़ रहा है तो इसमें मेरी क्या गल्ती?

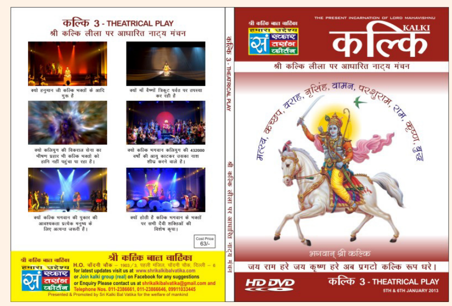

वाणी अनुभव— तुम्हारी गल्ती यह है कि तुमने इस बारे में कुछ नहीं किया। आज से, अभी से तुम्हारा काम खत्म। इस डॉक्यूमेंटरी की जिम्मेदारी तुम्हारी बुआ की। अगर ये डॉक्यूमेंटरी का काम आगे नहीं बढ़ता तो तुम्हारी बुआ के पॉइंट रोज कटेंगे। अपनी बुआ को तुम बता देना वर्ना किसी दूसरे भक्त से उनके पास इसका संदेश आ जाएगा।

आकांक्षा—बुआ कह रही थी कि मुझे इस डॉक्यूमेंटरी की रॉयल्टी नहीं मिल रही, क्या करें?

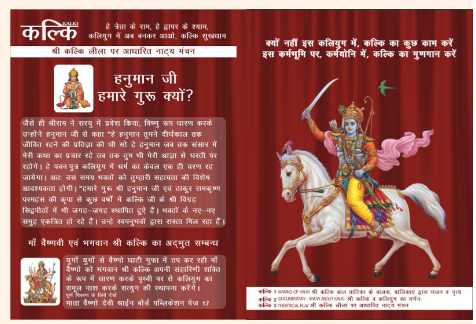

वाणी अनुभव— हाँ तुम्हें इसकी रॉयल्टी नहीं मिल रही है। एक काम करो इसका कवर डिजाइन करोगे तो बड़े अक्षरों में लिखना Shree Kalki- The Last Saviour-a film by Akansha Chaudhary अपने आप रॉयल्टी मिलनी शुरू हो जाएगी।

आकांक्षा—कवर में अपना फोटो भी डाल दूँ?

वाणी अनुभव—नहीं अपना फोटो डालने की जरूरत नहीं है।

माँ वैष्णो देवी यात्रा

प्रिय साथियों, प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी माँ वैष्णो देवी की यात्रा का आयोजन श्री आदर्श सिंघल जी के तत्वाधान में किया जा रहा है। कार्यक्रम इस प्रकार है—

22 जून 2013—दिल्ली से वैष्णो देवी के लिए प्रस्थान

26 जून 2013—सुबह 6 बजे दिल्ली में आगमन

प्रति व्यक्ति (सवारी) किराया—2000 रु

रेलगाड़ी द्वारा जम्मू होते हुए कटरा पहुंचेंगे।

इस बार महामाया धर्मशाला में सभी भक्तों के ठहरने का प्रबंध किया गया है। धर्मशाला में ही हवन व कीर्तन की व्यवस्था रखी गई है।

सीट बुकिंग व पैसे जमा करवाने की अंतिम तिथि 9 जून है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क —

श्री नवीन गुप्ता -9911074012

श्री राकेश अग्रवाल-9810654193

मेघना गोयल -9136377829

संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान

23 जून 2013 को— कृष्ण तीर्थ व हंस तीर्थ

प्रिय साथियों, जैसा कि आपको मालूम है सत्युग की स्थापना के समय विश्वकर्मा जी ने भगवान शंकर की बसाई संभल नगरी में 68 तीर्थ और 19 कूपों की स्थापना की थी लेकिन कलियुग की भीषण आंधी ने कुछ तीर्थों के ऊपरी अस्तित्व को लुप्त (मलिन) जबकि बाकी तीर्थ अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

अभी 26 मई 2013 को हमने संभल ग्राम में मणिकर्णिका तीर्थ (मनोकामना/ महोदकी) तीर्थ में माँ दुर्गा के आगे दो तीर्थों (यम तीर्थ एवं ऋण मोचन तीर्थ) को जागृत करने के लिए श्री कल्कि सहस्त्रनाम का यज्ञ सुश्री इंदू बंसल, मनु गुप्ता एवं सुश्री नीलम वार्ष्णेय के तत्वाधान में किया। जिसमें दिल्ली से निम्न कल्कि भक्त गए :—

सुषमा गुप्ता, राकेश गुप्ता, आशा कंवर, रेखा गुप्ता, दीपक गुप्ता, सुनील मित्तल, इंदू मित्तल, मनु गुप्ता, मामाजी, रमा गड़ौदिया, अनिल गड़ौदिया, संजू गड़ौदिया, अनिमेष गड़ौदिया, आदर्श गुप्ता, सविता गुप्ता, प्राची गुप्ता, शोभा गुप्ता, अलका दीक्षित, मनोज पांडे, शालिनी पांडे, आयूषी पांडे, मेघना गोयल, उपासना गोयल, महिमा गुप्ता, नवीन गुप्ता, रीतु गुप्ता, पदमाशरण गोयल, मुक्ता गोयल, तारिणी, जाहनवी, हरेन

अब जून एवं जुलाई महीने में मणिकर्णिका तीर्थ पर ही कल्कि सहस्त्रनाम के यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

23 जून 2013 को— कृष्ण तीर्थ व हंस तीर्थ

21 जुलाई 2013 को— श्वेत माधव तीर्थ व लोलार्क तीर्थ

26 मई को संभल में 24 घंटे का महामंत्र की ध्वनि का अखंड जाप का आयोजन भी किया गया था जिसमें संभल के भक्तों के साथ दिल्ली से गए भक्तों ने भी भाग लिया। भगवान श्री कल्कि से हमारी यही प्रार्थना है कि संभल में ऐसा आयोजन यदि प्रति सप्ताह हो तो संभल सरकार शीघ्र प्रगट होंगे।

भगवान श्री कल्कि अब अग्रोहा धाम में विराजेंगे

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र में वैश्य, जिस पर भगवान शंकर का एक वृहस्त हाथ है और दूसरा

हाथ समस्त समाज पर है। उसी वैश्य समाज के पूर्वज महाराजा अग्रसेन की पुण्यस्थली अग्रोहा में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना। आप सभी बालक बालिकाओं से अनुरोध है कि इस अति विशिष्ट कार्य के लिए (जोकि हमारी नींव का पत्थर है) अपने शुभ के खजाने में से जो भी कम से कम बन पड़े अवश्य दें। जितनी जल्दी आपका सहयोग आएगा उतनी ही जल्दी वहाँ की नींव में लगना शुरू हो जाएगा। आप अपना सहयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से (फोन पर बता कर अथवा सीधे ही) हमारे इन प्रभारियों तक पहुंचा सकते हैं—

सुश्री इंदु बंसल 9818416191
श्री मनोज पांडे 9212703815
सुश्री मेघना गोयल 9136377829
अंकित गड़ौदिया 9312539397
सुश्री अलका गोयल 9811281271

देखें पृष्ठ-16 पर अग्रोहा धाम का चित्र

विभिन्न स्थलों से हवाई जहाज द्वारा वाराणसी आए कल्कि भक्तों की सूची :-

अमित गुप्ता, पारूल गुप्ता, मनोज शर्मा, अनमोल शर्मा, सुनील गुप्ता, रश्मि गुप्ता, दिनेश गुप्ता, रेनू बंसल, शोभित गुप्ता, उदित गुप्ता, काश्वी, उदय गुप्ता, कृष्णा, अनामिका, इंदू बंसल, विजय गुप्ता, भावना अग्रवाल, मामाजी, सुभाष गुप्ता, डॉ. वी. पी. गुप्ता, रीता गुप्ता,संजय अग्रवाल, रचना गुप्ता, अर्चित गुप्ता, ज्योति गुप्ता, मानविक गुप्ता,,विनीता मोचरी, सुधा गुप्ता, विपुल गुप्ता, प्रियंका गुप्ता, रिशांक गुप्ता, हिमांश गुप्ता, मोहन दास, राम विश्वास, राजिंद्र गुप्ता, , दीपक गुप्ता, नेहा गुप्ता, कशिश गुप्ता, जय गुप्ता, प्रमोद गुप्ता, सुनील गुप्ता, अतुल गुप्ता, सुधा गुप्ता, अनिल अग्रवाल, नीरू अग्रवाल, दीपक गुप्ता, अल्पना गुप्ता, सूर्यनारायण गुप्ता, , बी. एस. अग्रवाल, बीना अग्रवाल, सौरभ गुप्ता, बेबी सविता, मोहन, प्रदीप, संगीता गुप्ता, मनोज गुप्ता एवं चारू गुप्ता।

संभ्रांत महिलाओं की जानी मानी संस्था **महिला मंगल** की वार्षिक 2013 पत्रिका **मंजूषा** में हमारी **श्री कल्कि बाल वाटिका सदस्या सुश्री ज्योति गुप्त** द्वारा बनाया कल्कि भगवान का विशिष्ट चित्र एवं **सुश्री इंदू बंसल** द्वारा लिखित लेख **मेरे देश की माटी का रंग हुआ लाल गोपाल तुम्हें आना होगा** के लिए उन्हें साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सब कैसे प्रभु श्री कल्कि ने अपनी कृपा से विचित्र एवं अदभुत संयोग से संभव किया?

अपने देश की माटी के अनेक रंग

—सुश्री इंदू बंसल 9818416191

हमारे देश की माटी के अनेक रंग अब कहाँ दिखते हैं। सभी रंग अब माटी के लाल रंग के नीचे दब गए हैं।

लाल रंग- हैवानियत द्वारा बहाया गया देश के बेटे बेटियों के खून से लाल हुई माटी का लाल रंग।

द्वापर युग में एक दुर्योधन था एक दु:शासन था। कौरवों से भरी सभा में द्रौपदी पूरी शक्ति से अपने शील की रक्षा के लिये चिल्लाई थी। बड़े भाई के वचन की मर्यादा से बंधे भीम और अर्जुन अपमान के शोलों से घिरे चुप बैठे रहे तो द्वापर युग के अवतार गोपाला ने वस्त्रावतार लिया और द्रौपदी के शील की रक्षा की। द्रौपदी के आहत नारित्व के प्रतिक्षोध के लिये भी प्रभु कृष्ण ने महाभारत के युद्ध का मंच सजाया।

पर आज क्या हो रहा है? ज़मी रो रही है आसमां रो रहा है

आज हम कलियुग में जी रहे हैं। कलियुग अर्थात काला युग पुण्य आत्माओं के पुण्यों का भक्षण करने वाला युग। पापियों के पापों का पोषण करने वाला युग।

आज हर गली, चौराहे, घर-घर में नर पिशाच जैसे दुर्योधन दु:शासन बैठे हैं। अपनी रक्षा के लिये चिल्लाती द्रौपदी की चीतकार वह नहीं सुन सकते। पूर्ण बलात्कार करने के बाद भी वे द्रौपदी को चिल्लाने का दण्ड देते हैं- उसके कण्ठ में, नाजुक अंगों में लोहे की शलाखा घुसाकर उसके प्रतिरोध करने का दण्ड। नारी का अपमान होते देख क्रोध से ऐंठने वाले भीम और अर्जुन को भी आज की नर पिशाच क्षमा नहीं करते, उसे भी पीट पीटकर अधमरा करके उन्हें खुशी मिलती है।

इस अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठाने का द्:साहस करने का भी कठोर दण्ड है। न्याय न्याय का ज्यादा शोर मचाने से राजा की शांति भंग होती है। राजा का रक्षक दस्ता भक्षक दस्ता बनकर हमारे देश की माटी के बेटे बेटियों को पीट पीटकर अधमरा कर देते हैं। बर्फीली ठण्ड में बर्फीले पानी की तेज़ बौछारों से उन्हें बहाया जाता है। क्या करें, कहाँ जाएं? एक रास्ता जो मुझे नज़र आता है-

जब भी हमारे देश के किसी बेटे या बेटी पर हुए अमानवीय अत्याचार के बारे में पढ़ें या सुने तो चाहे हम कुछ नहीं कर पाएं बस द्रौपदी की तरह युगावतार श्री कल्कि से करुण पुकार तो कर ही सकते हैं।

आओ नाथ प्रगटो नाथ केशव माधव कल्कि कल्कि

एक बार कृष्ण प्रभु से यह पुकार अवश्य करें।

हमारे वेद पुराण शास्त्र कहते हैं द्वापर के कृष्ण कलियुग में कल्कि बनकर अवतरित होंगे लेकिन कलियुग की माया से सम्मोहित हमारे धर्म गुरु विद्वान कहते हैं, कल्कि अवतार 4 लाख 32 हजार वर्ष बाद होगा। हम सब में दु:ख सहने की सहन शक्ति बढ़ गई हैं यह सोचकर कि कलियुग है भाई। **जरा सोचकर देखें जो गोपाल एक द्रौपदी की पुकार पर रजस्वला नारी के अधोवस्त्र के रूप में अवतरित हो गए क्या वह लाखों द्रौपदियों की पुकार पर समय की सीमा लांघ कर तुरन्त अवतरित नहीं होंगे! वे अवश्य अवतरित होंगे लेकिन उनकी पुकार तो करो।**

अपने देश की माटी के अनेक रंग की लेखिका सुश्री इंदू बंसल को साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया

अद्‌भुत संयोग (विचित्र सत्य)

—श्रीमती मंजू मित्तल (पूर्व प्रधान/ट्रस्टी महिला मंगल)

20 मार्च 2013 को महिला मंगल का होली उत्सव साईं ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। उत्सव की समाप्ति के पश्चात जब मैं सभागार से बाहर निकली तो एक महिला मेरे समीप आईं। हमने एक दूसरे को होली की बधाई दी। मेरे मुख से सहसा ही निकला कि आप इंदु बंसल जी हैं न? वह महिला चौक गईं और कहने लगी कि आप मुझे कैसे जानती हैं?

तब मैंने कहा कि हम नवम्बर 2012 में महिला मंगल के दीवाली मेले में मिले थे। उस पर उन्होंने मुझे बड़े अचम्भित भाव से देखा। हम आपस में बातचीत करने लगे। मैंने उनसे कहा कि आपने अप्रैल 2013 में प्रकाशित होने वाली मंजूषा पत्रिका के लिये जो लेख भेजा है वह मुझे बहुत अच्छा लगा। उस लेख में आपने मन को भाने वाला गोपाला और कल्कि जी के पुनर्अवतार की भावना को प्रदर्शित किया है।

अगले ही दिन इंदु बंसल जी ने मुझसे मिलने की इच्छा जताई और 22 मार्च 2013 को इंदु बंसल जी अपनी 5 सखियों के साथ मेरे निवास स्थान पर पहुँची। वह अपने साथ 2012 की मंजूषा पत्रिका लाईं थीं जिसका विषय था वैदिक काल से आज तक भारतवर्ष में बहती ज्ञान गंगा। उसके कई पृष्ठों और पंक्तियों को उन्होंने रेखांकित कर रखा था, क्योंकि उन्होंने वह पत्रिका बहुत ध्यान से पढ़ी थी।

मैंने इंदु जी से कहा कि नवम्बर 2012 की पत्रिका में हम आपका विज्ञापन दे नहीं पाए थे परन्तु इस बार 2013 की पत्रिका में आपका विज्ञापन दे रहे हैं। इस पर इंदु जी कहने लगीं कि उन्होंने तो कोई विज्ञापन भेजा ही नहीं था। जब मैंने कम्प्यूटर खोल कर उन्हें विज्ञापन दिखाया तो वह बोलीं न तो यह विज्ञापन उनका है और न ही ऑफिस का पता उनका है। वह तो अभी महिला मंगल की नई सदस्या बनी हैं और पिछले साल अप्रैल में तो वह महिला मंगल की सदस्या थी ही नहीं। यह सुनकर तो मैं हक्की बक्की रह गई। इसका अर्थ यह हुआ कि महिला मंगल के दीवाली मेले पर 2012 में मैं किसी और इंदु बंसल से मिली थी। मैं आजतक आश्चर्य चकित हूँ कि जिस महिला से मैं पहले कभी मिली ही नहीं, उस महिला का सही नाम मेरे मुख से कैसे निकल गया? इंदु बंसल नाम की अनेकों महिलाएं हो सकती हैं इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। अचम्भे की बात तो यह है कि इस महिला को देखे जाने बिना मैंने कैसे इन्हें इंदु बंसल समझा। **यह किसी चमत्कार और अद्‌भुत संयोग से कम नहीं है।** नई वाली इदु बंसल जी ने बड़े भावपूर्ण मन से मंजूषा पत्रिका के लिये पूरे पृष्ठ का रंगीन विज्ञापन भगवान श्री कल्कि का मुझे दिया। उनकी सखियों के साथ धार्मिक चर्चा में बिताए उन क्षणों में **मैंने जाना कि वह सभी बालकों में सुसंस्कार देने हेतू कार्यरत्त हैं।** इन सभी को पूर्ण विश्वास है कि आज जो हमारे भारतवर्ष की गिरती अवस्था है उसके उद्धार के लिये भगवान श्री कल्कि इस कलियुग में प्रगट अवश्य होंगे। मेरा मन द्रवित है और मुझे उनकी बातों पर पूरा विश्वास है **क्योंकि मेरा भारत अवतारों का देश है, इस भूमि पर भगवान अनेकों रूपों में हर युग में प्रगट हुए हैं।**

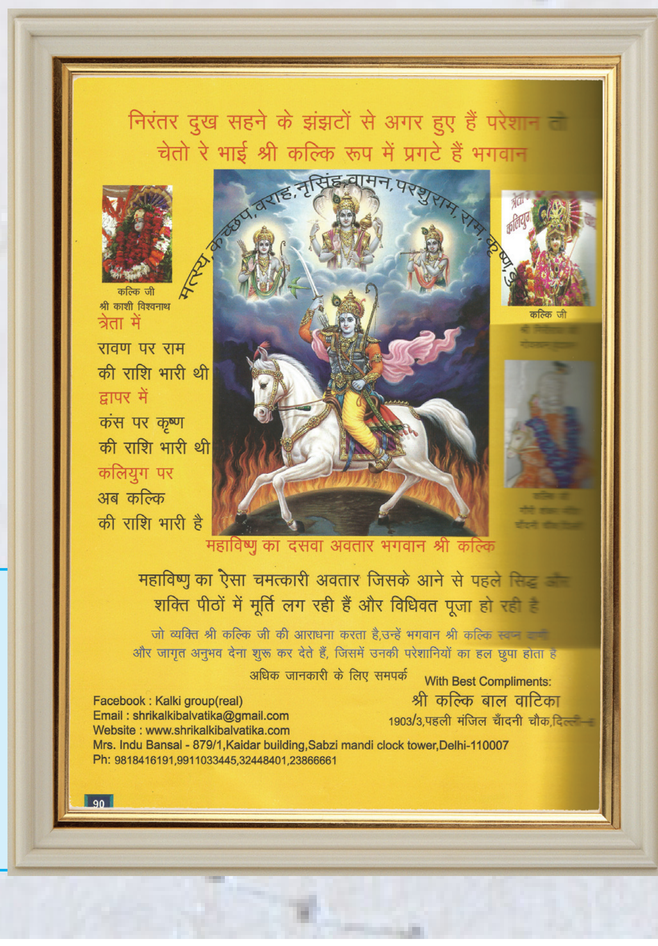

हमारी बाल वाटिका सदस्या सुश्री ज्योति गुप्ता (प्रभारी, श्री कल्कि म्यूजियम) ने पहली बार हिंदी में टाइप करके रात्रि 10 बजे से सुबह 5 बजे तक मंजूषा पत्रिका के लिए भगवान श्री कल्कि का विवरण प्रस्तुत किया है। अपने इस सुप्रयास के लिए वह साधुवाद की पात्र हैं। प्रस्तुत है उनके द्वारा तैयार किया गया भगवान श्री कल्कि का विवरण—

भविष्य-दर्शन

अन्तर्जगत में स्वप्नानुभव एक सम्पदा के दूसरे संस्करण का नामकरण

प्यारे बच्चों और साथियों कितने भाग्यशाली हो कि श्री हनुमान जी-ठाकुर स्वामी रामकृष्ण परमहंस-श्री कल्कि जी आपको लोक परलोक से समय समय पर अवगत करवाते रहते हैं। 5 जनवरी 2013 को **स्वप्नानुभव एक सम्पदा** ग्रंथ का विमोचन हुआ। सुश्री मेघना गोयल (9136377829) को 8 जनवरी को एक स्वप्नानुभव में भगवान ने बताया कि स्वप्नानुभव एक सम्पदा स्वप्न-अर्थ-उपचार-प्रार्थना सहित वाली दूसरे ग्रंथ का नाम **भविष्य दर्शन** होगा। पूर्ण विवरण जनवरी 2013 के मासिक पत्रिका के अंक में पढ़ सकते हैं। प्रस्तुत हैं **भविष्य दर्शन** में आने वाले कुछ स्वप्नानुभव जिन पर मामाजी, सुश्री सुषमा गोयल व अन्य पैनल सदस्य कार्यरत हैं—

*** दुकान का ताला खुलकर बंद * गुलाब का फूल * नजर की तीन बत्तियाँ * 100 में से एक की जमानत * 21 वर्षीय लड़के की शादी मर्द के साथ * तू नहीं और सही तो मैं क्यों नहीं * मरकर भी भाषण * तुझे ही नहीं-तेरे दोस्त-रिश्तेदार को भी बचाऊंगा * मैट्रो ने पीपल की जड़ें काटी * माँ ने कहा इसे दुकान की चाबी मत देना * स्वर्गीय पिता ने स्वर्गीय माँ द्वारा रूका रुपया दिलवाया * एक नहीं दोनों अमानतें जाएंगी * मामाजी की कितनी मौतें * धनाढय परिवार में कल्कि का काम करने वालों को न बचा पाए * बड़ों के आगे थोड़े शब्द बोलकर निकल जाओ * दीपक जलाकर अंतर्जगत का मैसेज वापिस * क्षणिक अनुभव— * लेबर यूनियन * झूला झूलते हुए हाई कोर्ट में अपील स्वीकार * कल्कि जी की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैले * पूरा विश्व जागेगा जागेगा * अणु परमाणु बन चुके हैं * मुर्दे को पूरा फूंको * तुम्हारा क्या है तुम्हारी गाड़ी तो बिना इंजन के भी चलेगी।**

नोट—जो भी कल्कि भक्त अपने स्वप्नानुभव जो उनके साथ घटित हुए हैं हमें लिख कर भेजें। इनके छपने पर कल्कि समाज को मदद और दृष्टा को सुख वैभवता मिलती है ऐसा हमने पाया है। वह बात अलग है ***मानूं मैं न मानूं***

कल्कि कल्प-वृक्ष

मेरा काम बच्चों का हाथ नारायण श्री कल्कि के हाथ में देना है। मुझे उन्हें वास्को डिगामा की तरह कल्कि जी का सुदृढ़ सैनिक बनाना है। मुझे बच्चों के जीवन के शुरू के सिर्फ 6 वर्ष चाहिए। उसमें से भी सिर्फ प्रत्येक महीने के एक दिन के 6-7 घंटे, जिसमें उन्हें खेल-खेल में सनातन धर्म (कर्म प्रधान धर्म का ज्ञान, माता-पिता, बड़ों का सम्मान व भगवान की नवधा भक्ति) के संस्कार दिए जाते हैं। फिर बाकी के वर्षों की मुझे फिक्र नहीं।

—मामाजी

मुझे बच्चों के ह्रदय की प्लेटों पर अच्छे संस्कार अंकित करने (लिखने) हैं ताकि उम्र के हिसाब से आने वाले वर्षों में कलियुग की भीषण आंधी से इस संघर्षमयी जीवन से टक्कर लेते हुए सुखी भाव से आगे ही आगे बढ़ते चले जाएं, कठिन परिस्थिति में टूटे नहीं। मुझे विवेकानंद की तरह ज्ञानी, झांसी की रानी, शिवाजी, राणा प्रताप व तांत्या टोपे आदि जैसे कल्कि जी के अर्जुन बनाने हैं साधु या संन्यासी नहीं। समाज के अभिन्न अंग बनाने हैं विद्रोही नहीं।

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 1 जून एवं 6 जुलाई 2013
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
सुश्री इंदू बंसल

दिनांक : शनिवार 8 जून एवं 13 जुलाई 2013
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट*
पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
सुश्री मेघना गोयल

आवेंगे सही प्रगटेंगे सही कल्कि भगवानखड्गधारी

1961 से मैंने रामकृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी, हनुमान जी के आवेशावतार गुरुवर बालमुकुन्द जी, दुर्गा जी एवं कल्कि जी के दृश्य, अदृश्य के सानिन्ध्य में प्रतिदिन दो घंटे माला, पूजा, धार्मिक शास्त्रों का पाठ व हवन से प्राप्त विभिन्न स्वप्न, जागृत, वाणी अनुभव व असंभव को संभव करने वाली अलौकिक अनुभूतियाँ प्राप्त कीं 1988 से इन चमत्कारी श्री कल्कि जी के अप्रतिम प्रभाव को बालक व बालिकाओं (क्योंकि मैंने पाया कि बड़ों को सिर्फ इज्जत व धन चाहिए) में रोपित करने के लिए चला कि कहीं यह (अलौकिक अनूभूतियाँ) मेरे साथ ही **लुप्त न हो जाएं। तब मैं अकेला था, अब मेरे साथ इन सच्चे, कर्मठ साथियों (दृश्य, अदृश्य) का कारवां जुड़ गया है। हम सभी का यही दृढ़ संकल्प है— प्रगट करें मिलजुल कल्कि को, अब ये ही प्रण ठाना**

श्री कल्कि बाल वाटिका, चाँदनी चौक
संरक्षक : श्री ओम प्रकाश गुप्ता 9312533445
संचालक : श्री योगेश गुप्ता 9311033445
भैया : श्री राहुल गोयल, **दीदी :** सुश्री अल्का गोयल

श्री कल्कि बाल वाटिका, करोड़ी मल कॉलेज
संरक्षिका : सुश्री सपना खन्ना 9953989891,
संचालिका : सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल 9810135085
भैया : श्री अंकुर गोयल, **दीदी :** सुश्री गरिमा गोयल

श्री कल्कि बाल वाटिका, पटपड़गंज
संरक्षिका : सुश्री पूजा गुप्ता 9811858723,
संचालक : श्री रवि अग्रवाल 9873606251
भैया : कुमार अनिरूद्ध, **दीदी :** कुमारी मनस्वी

श्री कल्कि बाल वाटिका, गगन विहार
संरक्षिका : सुश्री इंदू बंसल 9818416191
संचालिका : सुश्री संगीता रस्तोगी 9911453848
भैया : कुमार शौर्य **दीदी :** कुमारी हिना

श्री कल्कि बाल वाटिका, उस्मानपुर
संरक्षिका : सुश्री मेघना गोयल 9911830603
संचालिका : सुश्री शालिनी पांडे 9582143784
भैया : कुमार उज्जवल पांडे, **दीदी :** कुमारी पूजा

श्री कल्कि बाल वाटिका, घंटाघर
संरक्षिका : सुश्री संजू गड़ौदिया 9312539397
संचालिका : सुश्री इंदू गुप्ता 9891085091
भैया : कुमार श्रेयांस, **दीदी :** कुमारी साक्षी

श्री कल्कि बाल वाटिका, नोएडा
संरक्षिका : सुश्री मुक्ता शर्मा 9811134378
संचालिका : सुश्री प्रतिभा शर्मा 9717417753
भैया : कुमार देव, **दीदी :** कुमारी अंबिका

श्री कल्कि बाल वाटिका, पंजाबी बाग
संरक्षिका : सुश्री मीनाक्षी गुप्ता 9811242748
संचालिका : सुश्री नलिनी गुप्ता 9818647564
भैया : कुमार तनिष्क, कुमार सार्थक, कुमार शुभ

मासिक पत्रिका कम्पोजिंग, सम्पादन प्रभारी : श्री राजेश गुप्ता-9811658415, सुश्री पूजा गुप्ता-9811858723, सुश्री मेघना गोयल-9968066625, सुश्री श्रुति सर्राफ-9830157545, सुश्री उपासना गोयल-7503215553

साहित्य सलाहकार समीति : श्री ओ.पी. गुप्ता-9212533445, सुश्री अलका गोयल-9811281271, सुश्री मेघना गोयल, सुश्री इंदु बंसल-9818416191, सुश्री रश्मि गुप्ता-9873345859, सुश्री संगीता गर्ग-9873349478, सुश्री रश्मि गनेरीवाल 9831273015, श्री हेमंत गुप्ता 9321128789, श्री वेद प्रकाश गुप्ता 9810000012, श्री महावीर चौधरी 09830334529

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना : श्री अनिल गड़ोदिया 9810025302, श्री योगेश गुप्ता-9311033445, श्री विपुल गुप्ता

सांस्कृतिक कार्यक्रम (नृत्य, कीर्तन व नाटक लीला) : श्री अंकुर गोयल-9818522778, सुश्री गरिमा गोयल 9999133046, सुश्री शलभ गोयल 9910066506

श्री कल्कि कीर्तन एवं व्यवस्था : श्री पदम गोयल 9910291711, कुमार अक्षय गड़ोदिया 9958161610, चंद्र मोहन राजपूत 9873434237, कुमार महावीर

तीर्थों पर आने-जाने की व्यवस्था : श्री नवीन गुप्ता 9971193344, श्री मनोज पाण्डे 9212703815

मूर्ति, शृंगार, पोशाक व लाईट व्यवस्था : श्री हर्षित गुप्ता 9999885277, अंकित गड़ोदिया 9812539397

श्री कल्कि साहित्य व्यवस्था : पं. अनिल कौशिक 9873091036, श्री लव जेटली 9899095693

वेबसाईट प्रभारी : सुश्री श्रेया चौधरी, श्री विष्णु गोयल 7503215553

श्री कल्कि हवन व्यवस्था : सुश्री अलका गोयल 9811281271, श्री रमेश चंद्र

श्री कल्कि मंदिर अखण्ड ज्योत एवं रख रखाव : श्री राहुल अग्रवाल 9891879718, श्री अनिरुद्ध गुप्ता 9873523985, श्री रोहित गुप्ता 9899499848

प्रसादम् व्यवस्था (अब अन्य मंदिरों में भी) : सुश्री वीना गर्ग 9899774568, श्री अमित गर्ग, श्री प्रेम शर्मा 9953048408

रामलीला सवारी व्यवस्था : श्री हितेश गुप्ता 9891248888, श्री आदर्श सिंघल, 9818525601

कानूनी सलाहकार : श्री अमित तिवारी 9310810888 (एडवोकेट दिल्ली हाई कोर्ट)

मानेसर मंदिर निर्माण : श्री सुभाष गुप्ता 9810300045, श्री राजीव गुप्ता 9818000012, सुश्री रेनू बंसल 981000012

मंत्र बॉक्स प्रभारी : श्री आनंद अग्रवाल 9891748188, श्री संतोष वैद्य

गौ सेवा भोजन प्रभारी : सुश्री पूर्णिमा गुप्ता 9810135805, श्री अजय गुप्ता

भक्ति की दो बहिना : सुश्री संजू गड़ोदिया 9312539397, सुश्री रमा गड़ोदिया 9313040701

इंग्लिश हिंदी दुभाषिया : कुमारी साक्षी गड़ोदिया 9868250570

प्रिंटिंग डिजाइनिंग पेपर सलाहकार : श्री अशोक सिंघल, श्री आदर्श सिंघल

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

श्री कल्कि बाल वाटिका के निरंतर कल्कि संग्रहालय की ओर बढ़ते कदम

1. भारत भूमि पर जन्म सौभाग्य की गाथा गाता है।
2. भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है।
3. भगवान विष्णु के दशावतार
4. अभी कल्कि क्यों?
5. कलियुग के चौथे चरण के लक्षण
6. कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया?
7. हनुमान जी/ रामकृष्ण परमहंस कल्कि वालों के गुरु क्यों?
8. प्राचीन भारत और आधुनिक भारत में अंतर
9. कल्कि जी की पुकार क्यों करें?
10. कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला
11. भगवान श्री कल्कि की पुकार ही सार है
12. कल्कि जी की भक्ति कैसे करें?
13. कल्कि जी का प्रचार कैसे करें?
14. धर्म/ भक्ति / ज्ञान और कल्कि भगवान
15. श्री कल्कि साहित्य

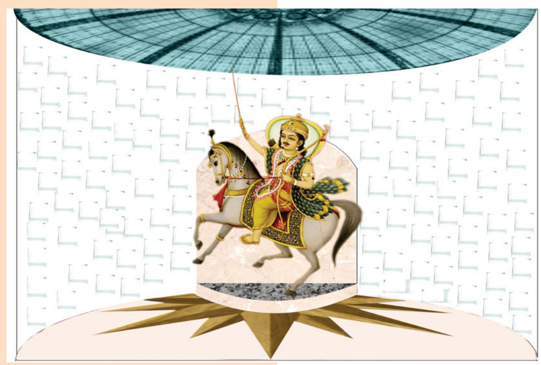

कल्कि संग्रहालय के लिये श्री राजीव गोयल द्वारा प्रस्तुत की गई एक छवि

अग्रोहा धाम

श्री कल्कि बाल वाटिका

* दिल्ली विश्वविद्यालय * पटपड़गंज * यमुना विहार * पंजाबी बाग * गगन विहार * महावीर नगर * मॉडल बस्ती * नोएडा * इंदिरापुरम

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

आभार श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

9312533445

9136377829

9968314876